हिन्दी विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय— भारतीय आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य के लक्षणों का विवेचन करें।—

वैसे तो किसी भी चीज को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। और फिर काव्य तो अत्यन्त ही व्यापक साहित्यिक विधा है। अतः इसे परिभाषा [के] खूँटे में बाँधना अत्यन्त ही कठिन है। फिर भी [वि]द्वानों ने काव्य लक्षण का विवेचन अपने-अपने ढं[ग से] किया है।

संस्कृत आचार्यों में भामह ने काव्य को [...] समन्वित शब्दार्थ कहा है। उनके अनुसार "[शब्]दार्थौ सहितौ काव्यम्" अर्थात् 'शब्द एवं अ[र्थ का स]हभाव होना ही काव्य है। भामह के इस परिभा[षा को आ]लोचकों ने यह कहकर अधूरा सिद्ध करने [...] [कि]या है कि इसमें 'रस' की कहीं चर्चा तक [नहीं] है, केवल शब्द-अर्थ की ही बात [...]

वामन के अनुसार – "काव्य वही है, जिसका सौंदर्य अलंकार से निखरता है यानी जिसमें अलंकार हो वह काव्य है। इसी प्रकार आनन्दवर्द्धन, कुन्तक आदि ने भी काव्य में रस, अलंकार, शब्द एवं अर्थ की अन्विति पर बल दिया है।

आचार्य मम्मट के अनुसार – "जिसमें गुण हो, जो दोषरहित हो एवं वैकल्पिक रूप से अलंकार युक्त हो, उसे काव्य कहते हैं"। उन्होंने काव्य के लक्षण को निरूपित करते हुए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया है –

दोष रहित रचना ही काव्य है।

काव्य की कल्पना शब्द और अर्थ दोनों के समन्वय से होती है।

गुण से रसात्मकता का बोध होता है।

आचार्य मम्मट के इस परिभाषा
आचार्य विश्वनाथ ने त्रुटिपूर्ण घोषित
है। उनके अनुसार कोई भी काव्य पूर्ण
रहित नहीं हो सकती, अतः निर्दोषता

काव्य का लक्षण नहीं हो सकता।

आचार्य विश्वनाथ ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यं" को काव्य की परिभाषा से बाँधने का प्रयास किया। यहाँ वाक्य से उनका मतलब सार्थक शब्द है। यदि हम विश्वनाथ की इस लोकप्रिय परिभाषा को मान लें, तो सहीन काव्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मम्मट का रस पारिभाषिक एवं व्यापार-सापेक्ष है जिसे समझे बिना रस-निष्पत्ति की प्रक्रिया जानी नहीं जा सकती। विश्वनाथ की परिभाषा में अव्याप्ति दोष है।

पंडित जगन्नाथ ने काव्य का सटीक लक्षण निरूपित करते हुए बताया है —
"रमणीयार्थ प्रतिपादकः काव्यम्"

अर्थात रमणीय अर्थ को प्रतिपादन करने वाला ही काव्य होता है।

आधुनिक भारतीय विचारकों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार

— " ~~आदमी~~ काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे।" जय ~~शंकर प्रसाद~~

जयशंकर प्रसाद के अनुसार — " काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।"

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार — जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्तिसाधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती है, उसे कविता कहते हैं।" शुक्ल जी की यह परिभाषा बताती है कि भारतीय साहित्यशास्त्र व्यवहारिक एवं संतुलित है। रस से उनका अभिप्राय आनन्द बोध अथवा सौंदर्यबोध से है। रमणीयता उस तत्व का प्रतिनिधित्व करती है जो लोक मन को प्रभावित करता है।